ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्...
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 अक्टूबर 2017
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११८
युगाब्द-५११८, अंक-९०, वर्ष-१०
कार्तिक मास, विक्रमी २०७४ (अक्टूबर 2017)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः।। –ऋ० १। २। ७। १

व्याख्यान–हे (देवाः) विद्वानो! (विष्णुः) सर्वत्र व्यापक परमेश्वर ने सब जीवों को पाप तथा पुण्य का फल भोगने और सब पदार्थों के स्थित होने के लिए (पृथिव्याः) पृथिवी से लेके (सप्त) सप्तविधि (धामभिः) धाम अर्थात् ऊँचे-नीचे सात प्रकार के लोकों को बनाया, तथा गायत्र्यादि सात छन्दों से विस्तृत विद्यायुक्त वेद को भी बनाया। उन लोकों के साथ वर्त्तमान व्यापक ईश्वर ने (यतः) जिस सामर्थ्य से सब लोकों को रचा है, (अतः)–सामर्थात्–उस सामर्थ्य से हम लोगों की रक्षा करे। हे विद्वानो! तुम लोग भी उसी विष्णु के उपदेश से [(नः अवन्तु)] हमारी रक्षा करो। कैसा है वह विष्णु? जिसने इस सब जगत् को (विचक्रमे) विविध प्रकार से रचा है। उसकी नित्य भक्ति करो।

सम्पादकीय

आओ! वर्ण व्यवस्था को स्थापित करें

जब तक इस राष्ट्र में वर्ण व्यवस्था पर आधारित समाज रहा तभी तक इस राष्ट्र में आपसी सौहार्द, सामञ्जस्य, एकता व सामाजिक समरसता रही, उसी के कारण राष्ट्र के लोग न केवल आपसी फूट से बचे रहे अपितु इसी कारण से राष्ट्र एकता के सूत्र में बन्धा रहा तथा सक्षम व सबल बना रहा।

वेद आधारित इस वर्ण व्यवस्था में मनुष्य निरन्तर उत्थान के पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित होता है। मनुष्य अपनी योग्यता को बढ़ाता जाता है और अपने बौद्धिक स्तर को अपने पुरुषार्थ से बढ़ाते हुए उच्च से उच्च वर्ण को प्राप्त होता हुआ मोक्ष तक पहुँच जाता है। उसको जहाँ आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त होती रहती है उसी के साथ-साथ यह भय भी रहता है कि यदि उसने आलस-प्रमाद किया, पुरुषार्थहीनता की तो वह निम्न स्तर पर भी जा सकता है।

कुछ लोग यह कहकर भी वर्ण व्यवस्था की आलोचना करते हैं कि कार्य के आधार पर समाज को चार भागों में बांटना तो ठीक लेकिन चारों भागों को समानता की अपेक्षा उच्च और हीन वर्ण में बांटा गया है। लेकिन यह आरोप निराधार है क्योंकि ऊपर से देखने पर भले ही यह लगे कि उच्च और हीन वर्ण है लेकिन मानव के स्तर पर सभी वर्णों को समानता प्राप्त है, सभी आर्य हैं। मानवीय व्यवहार में सभी समान हैं। केवल अपनी योग्यता, त्याग, पुरुषार्थ व समाज में योगदान व उनके कार्य के महत्व के आधार पर उसका प्रतिफल भिन्न-भिन्न प्राप्त अवश्य करता है और इसमें यह संभावना भी रखी गई है कि यदि व्यक्ति चाहे तो इस प्रतिफल को भी अपने पुरुषार्थ से बढ़ा सकता है। कहीं पर भी वर्ण व्यवस्था में किसी भी स्तर पर अपमान किसी का भी नहीं है, जब किसी का अपमान ही नहीं तो फिर ऊंच-नीच का भाव तो वर्णों में रहा ही नहीं। केवल प्रतिफल अलग-अलग रहेगा, क्योंकि प्रतिफल उसकी योग्यता, पुरुषार्थ व उसके कार्य के महत्व पर निर्भर करता है, और यह कोई असमानता नहीं है।

लेकिन दूसरी ओर जब से यह वेद आधारित कर्मणा वर्ण व्यवस्था बिखरी तथा अज्ञानता व स्वार्थ के कारण उसका स्थान जन्म आधारित जाति व्यवस्था ने लेना आरम्भ किया तो उसी समय से समाज का पतन होना प्रारम्भ हो गया और राष्ट्र कमजोर होता चला गया। समाज चार वर्णों से हटकर हजारों जातियों और उपजातियों में बंट गया और यह आधार बन गया मनुष्य मात्र के शोषण का तथा कुछ लोगों की स्वार्थ पूर्ति का। हजारों वर्षो से यही चलता आ रहा है और वर्तमान की इस भीड़तन्त्र व्यवस्था ने इसको और अधिक बढ़ाया ही है कम नहीं किया है। वर्तमान की परिस्थिति तो यही हो गई है कि सभी परस्पर एक-दूसरे के शोषण में लगे हुए हैं। सभी जातियां अपने आपको शोषित सिद्ध करने में लगी हुई हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि सभी शोषण में लगी हुई हैं। शोषण कर रहे हैं मानवता का, समाज के सामञ्जस्य का और राष्ट्र की एकता और अखण्डता का।

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

इन्हीं परिस्थितियों में आर्यों के निर्माण के बाद वेद आधारित वर्ण व्यवस्था का पुर्नस्थापन का कार्य भी प्रारम्भ हुआ। पहले युवक आर्य बने फिर वह अपने स्वभाव अनुसार किसी वर्ण को धारण करे तभी वह वर्ण व्यवस्था के वास्तविक स्वरूप और उसमें निहित समानता को ठीक से समझ सकता है। इसी उद्देश्यपूर्ति के लिए विशेषकर आर्यों में और सामान्य रूप से समाज में क्षत्रिय वर्ण की स्थापना का कार्य प्रारम्भ किया गया है- राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के द्वारा।

राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा पिछले कई वर्षों से आर्य युवाओं में क्षत्रिय गुणों को विकसित करने का कार्य कर रही है। क्षत्रिय सभा एक वर्ग, जाति या समूह का संगठन नहीं है, इसमें हर वह युवक सम्मिलित है जो अपने गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार क्षत्रिय है अर्थात् वह राष्ट्र में अन्याय को हटाकर न्याय की स्थापना करना चाहता है तथा समाज में व्याप्त अन्याय को समाप्त करने के लिए आन्दोलन करने को भी तैयार है और ऐसा करने के लिए पुरुषार्थरत् है।

इसी कड़ी में विजय पर्व (30 सितम्बर) को पानीपत में हजारों क्षत्रियों ने एकत्रित होकर राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के वार्षिक सम्मेलन में एक कदम आगे बढ़ाया और निरन्तर अपने बढ़ते रहने का संकेत दिया है। पूरा आर्य जगत क्षत्रियों को अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने में सहयोग को तत्पर है।

क्षत्रिय धर्म यही है कि पहले तो वह वेद की आज्ञा पर चलने वाला हो अर्थात् आर्य हो, भयरहित होकर पुरुषार्थ करे। आर्य बने बिना क्षत्रिय बना ही नहीं जा सकता है, प्रत्येक वर्ण के कार्यों का ठीक-ठीक पालन तभी हो सकता है जब वह व्यक्ति वेद को जानता हो, उसे मानता हो और उसी के अनुसार आचरण करता हो। बिना वेद आज्ञाओं को जाने व्यक्ति वर्णाश्रम धर्म का पालन ठीक से कर ही नहीं सकता है।

राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा निरन्तर क्षत्रियों के निर्माण में संलग्न है। बिना क्षत्रियों के समाज व राष्ट्र में वेद की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती है और अन्य वर्ण भी स्थिर नहीं हो सकते हैं। सभी वर्णों की रक्षा क्षत्रिय ही करता है। वही ब्राह्मण को भयरहित होकर शास्त्र अन्वेषण करने का अवसर देता है, इसीलिए वेद में कहा गया है- **इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्**। क्षत्रिय ही वैश्य को धर्मानुसार धन कमाने का अवसर देता है और समाज में केवल धर्मानुसार ही धन की वृद्धि हो ऐसा सुनिश्चित करता है, वही शुद्र वर्ण के लोगों का रक्षण करता है और जहाँ वेदानुसार क्षत्रिय वर्ण का लोप हो जाता है वहाँ कोई भी अपने वर्ण का ठीक से पालन नहीं कर पाता है, ब्राह्मण केवल राजसभा में सम्मान चाहने लग जाता है, अधर्म से धन कमाने की प्रवृति और अवसर उपलब्ध होने लग जाते हैं। इसलिए सम्पूर्ण समाज व राष्ट्र की व्यवस्थाओं को ठीक करने के लिए क्षत्रिय वर्ण का उत्थान अत्यन्त आवश्यक है।

आर्यों के द्वारा क्षत्रिय वर्ण की स्थापना से एक बहुत बड़ा संदेश समाज में जाएगा जब हर युवक अपनी योग्यता के आधार पर क्षत्रिय बनेगा जिससे तथाकथित जातियों के मकड़जाल को तोड़ने में सहायता मिलेगी। जन्म आधारित जाति व्यवस्था रूपी कोढ़ को समाज से समाप्त करने के लिए वर्ण व्यवस्था की स्थापना अतिआवश्यक है। और क्षत्रिय वर्ण की स्थापना तो प्रारम्भ में ही इसीलिए भी आवश्यक है कि यही सबको प्रश्रय देता है, इसी के बल पर समाज व राष्ट्र में व्यवस्थाएं स्थापित होती हैं, शासन स्थापित होता है और आर्य क्षत्रियों का शासन ही वैदिक व्यवस्थाओं को स्थापित कर समाज व राष्ट्र को सुदृढ़ बना सकता है, वेद आधारित समाज बना सकता है, वह वैदिक विद्वानों के निर्देश में चलता है, अतः राष्ट्र को पुनः उच्चता कि शिखर पर ले जा सकता है। आर्यों! आर्याओं! आओ हम सब मिलकर इस दिशा में आगे बढ़ें। अधिक से अधिक आर्यों का निर्माण करें, जिससे अधिक से अधिक क्षत्रिय बन सकें और इस राष्ट्र के उत्थान का मार्ग प्रशस्त हो। सभी का अहर्निश पुरुषार्थ इसी दिशा में हो, इसी संकल्प के साथ हम आगे बढ़ें और आर्य क्रान्ति की ओर आगे बढ़ रहे आर्य क्षत्रियों का सहयोग करें।

-आचार्य सतीश जी

ऋषि दयानन्द की सत्य आधारित वाक्पटुता

1. एक दिन बहुत-से मनुष्यों ने मिलकर विचार किया कि स्वामीजी सबका मुख बन्द कर देते हैं। उनपर कोई ऐसा प्रश्न करो, जिससे एक बार तो उनको भी नीचा देखना पड़े। वहां सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि कल पूछा जाये कि आप ज्ञानी हैं अथवा अज्ञानी? यदि वे कहें कि मैं ज्ञानी हूँ तो उनको कहा जाय कि महापुरुष अंहकार नहीं किया करते, और यदि वे अपने को अज्ञानी कहें, तो उनसे कहा जाय कि जब आप स्वयं अज्ञानी हैं तो हमें क्या समझायेंगे?

आगामी दिन जब यह प्रश्न स्वामी जी से किया गया तो उन्होंने तत्काल उत्तर दिया कि "मैं कई विषयों में ज्ञानी हूँ और कईयों में अज्ञानी। वेद-शास्त्रादि विषयों में पूर्ण ज्ञानी हूँ और फारसी, अरबी और अंगरेजी आदि विषय मैं नहीं जानता, इसलिये उनमें अज्ञानी हूँ। यह उत्तर पाकर प्रश्नकर्त्ता लोग हक्के-बक्के रह गये और एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। उस दिन गुजरात (वर्तमान में पाकिस्तान में एक कस्बा) वासियों को निश्चय हो गया कि स्वामी जी को जीतना सर्वथा असम्भव है, उनकी तात्कालिक स्फुरणशक्ति आश्चर्यकारिणी है।

2. एक दिन स्वामीजी प्रातःकाल भ्रमण कर रहे थे। मार्ग में पादरी मैकी महाशय से भेंट हो गई। नमस्कारादि के अनन्तर मैकी महाशय ने कहा-"स्वामीजी, आप ईसाई धर्म का बड़ा कड़ा खण्डन करते हैं।" उन्होंने उत्तर दिया, "मैं जो कुछ सुनाता हूँ वह आपके ग्रन्थों का पाठ होता है। यदि आपकी धर्म-पुस्तकों को सुनाना खण्डन है तो ऐसा खण्डन आप भी करते हैं। द्वेषबुद्धि से कुछ नहीं कहता, और न ही अनुचित समालोचना करता हूँ।"

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	5 अक्टूबर दिन-गुरुवार	मास-आश्विन	ऋतु-शरद	नक्षत्र-उ. भाद्रपदा
अमावस्या	19 अक्टूबर दिन-गुरुवार	मास-कार्तिक	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-हस्त
पूर्णिमा	4 नवम्बर दिन-शनिवार	मास-कार्तिक	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-भरणी
अमावस्या	18 नवम्बर दिन-शनिवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-विशाखा

हमारा महान इतिहास-रामायण

-आर्य सोनू, कैथल

यह रामायण की रचना आदिकवि (विश्व के प्रथम कवि) महर्षि वाल्मीकि जी के द्वारा की गई। इसमें मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के महान त्याग, तपस्या, आदर्श और पौरुष का विस्तृत और प्रामाणिक वर्णन महर्षि जी के द्वारा किया गया है। यही नहीं आर्यों के श्रेष्ठ आचार-व्यवहार जैसे आदर्श राजा, आदर्श नागरिक, आदर्श पुत्र, आदर्श पति आदि का भी अत्यन्त सुन्दर वर्णन रामायण में देखने को मिलता है। विश्व के महाकाव्यों में रामायण महत्वपूर्ण स्थान रखती है। समय-समय पर अनेक विद्वानों ने रामचन्द्र जी का इतिहासलेखन किया है किन्तु विभिन्न करणों से उनमें प्रक्षेपों के कारण बाल्मीकि रामायण को ही प्रामाणिक व आर्ष माना जाता है। हाँलाकि महाभारत की तरह रामायण में भी समय-समय प्रक्षेप होते रहे हैं जिनका शोधन आवश्यक है। फिर भी ऋषि बाल्मीकि, श्रीरामचन्द्र जी के समकालीन थे, अतः उन्होंने आँखों देखा प्रामाणिक इतिहास लिखा है। बाल्मीकि रामायण को न केवल आदि काव्य माना जाता है अपितु इसे सर्वप्रथम ऐतिहासिक ग्रन्थ भी माना जाता है।

प्रक्षेप और उनका कारण- यदि किसी राष्ट्र को नष्ट करना चाहते हो तो उसके इतिहास को समाप्त कर दो, राष्ट्र स्वतः ही नष्ट हो जाएगा। यह अंग्रेजों का सिद्धान्त है, जिसके बल पर उन्होंने विभिन्न राष्ट्रों को इतिहास विमुख करके, उन्हें अंग्रेजी मानसिकता का शिकार बनाकर उनपर अनेक वर्षों तक राज किया है। इसी के फलस्वरूप विभिन्न पाश्चात्य लेखकों द्वारा हमें जंगली सिद्ध करके, हमारे ऊपर राज करने व अंग्रेजों को हमसे श्रेष्ठ व सक्षम सिद्ध करने हेतु हमारे इतिहास में नाना प्रकार की विकृतियाँ डाली गयी हैं।

यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि आजादी के इतने वर्षों पश्चात् भी हम अंग्रेजों व मुसलमानों तथा अंग्रेजी मानसिकता ग्रस्त बुद्धिजीवियों द्वारा रचित इतिहास ही विश्वविद्यालयों व कॉलेजों में पढ़ एवं पढ़ा रहे हैं। अंग्रेजों से पूर्व भारतीय विद्वानों विशेषकर कवि तुलसीदास जी द्वारा रचित् रामचरितमानस के कारण भी कई घटनाएं रामायण में जोड़ दी गई जो बाल्मिकीय रामायण में नहीं थी। क्योंकि तुलसीदास जी श्रीराम चन्द्र जी के समकालीन नहीं थे और उन्होंने रामचरितमानस राम को ईश्वर मानकर भक्ति भावना से लिखा है, अतः ऐतिहासिक दृष्टि से रामचरितमानस भी अप्रामाणिक है, हाँ साहित्य की दृष्टि से उसे उच्चकोटि का काव्य माना जाता है।

विभिन्न प्रक्षेप- जैसाकि उपरोक्त वर्णन से सिद्ध है कि समय-समय पर रामायण में मिलावट हुई है। विशेषकर श्रीरामचन्द्र जी के पावन चरित्र पर ऊंगली उठाने के लिए उत्तर काण्ड में अनेक अनावश्यक घटनाएं जोड़ी गई हैं। रामायण में अनेक घटनाएं जैसे रावण के 10 सिर, हनुमान व अन्यों की पूंछ व उनका बन्दर होना, राम द्वारा शम्भूक वध, सीता की अग्नि परीक्षा व सीता का त्याग, 6 माह तक कुम्भकरण का शयन तथा अनेक अन्य अनावश्यक प्रकरण बाद में जोड़े गए हैं। बाल्मिकी रामायण में इनका वर्णन नहीं है।

लेखनकाल-(लाखों वर्ष प्राचीन इतिहास) अग्रेजों द्वारा रचित इतिहास के प्रचलन के कारण अनेक विद्वान संसार की आयु केवल 5-6 सहस्र वर्ष मानते हैं, वे भारतीय इतिहास को भी मात्र 5-6 हजार वर्षों तक समेटते हैं जो कि सर्वथा असत्य व पक्षपातपूर्ण है। श्रीराम चन्द्र जी का जन्म त्रेता युग के अन्त में हुआ था। इस प्रकार युगों की कालगणना करने पर श्रीराम का जन्म लगभग नौ लाख वर्ष पूर्व बैठता है, यही नहीं अनेक विद्वान इससे भी अधिक समय रामायण का मानते हैं।

दूसरी साक्षी- रामायण के सुन्दर कांड में बाल्मिकी जी चार दान्त वाले हाथियों का वर्णन करते हैं! यह चार दान्त वाले हाथी आज से अढ़ाई करोड़ वर्ष से लेकर 55 लाख वर्ष पूर्व तक अफ्रीका आदि महाद्विपों में पाए जाते थे। बाल्मिकी जी इन हाथियों का वर्णन करते हैं अतः वे इनसे परिचित थे। इस प्रमाण के आधार पर भी नौ लाख वर्ष से भी पूर्व (प्राचीन) रामायण काल सिद्ध होता है।

तीसरा साक्ष्य-(रामसेतु) कुछ वर्षों पूर्व यू.एस.ए. की अन्तरिक्ष ऐजेन्सी नासा ने उपग्रह द्वारा रामसेतु के चित्र लिए थे, जिनमें यह साफ-साफ भारत व श्रीलंका के बीच सेतु नजर आ रहा है। जांच के पश्चात् विशेषज्ञों ने इसका निर्माण काल लगभग 7.5 लाख वर्ष पूर्व माना है, भारतीय जनमानस तो लाखों वर्षों से रामसेतु को कहता व मानता आ रहा है। अतः इस प्रमाण के अनुसार भी लाखों वर्ष पूर्व रामायण का रचना काल सिद्ध हुआ। किन्तु यह प्रश्न शंका पैदा करता है कि अलग-अलग प्रमाणों में काल अलग-अलग बैठता है? उसका समाधान यह है कि अभी तक भारतीय मानसिकाता वाले विद्वानों की तो सुनी ही नहीं गई। और इनकी व्यवस्थित जांच का अवसर यहाँ की सरकारों ने कभी दिया ही नहीं। उल्टा कांग्रेस तो इस रामसेतु को तुड़वाने को ही तैयार हो चुकी थी। अतः जब व्यवस्थित जांच व अन्वेक्षण भारतीय मानसिकता के विद्वान करेंगे तो काल भिन्नता की समस्या का समाधान भी संभव है।

महान आदर्श शास्त्र- रामायण महान आदर्श शास्त्र भी है। इसमें आदर्श राजा-नागरिक, आदर्श पुत्र व पति, आदर्श भ्रातृ प्रेम, नारी गौरव, आदर्श सेवक व मित्र तथा राजनीति व युद्धनीति विषयक विस्तृत ज्ञान महर्षि जी ने उडेला है। जो महानुभाव प्राचीन गौरवमयी इतिहास, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी के पावन चरित्र, प्राचीन राजव्यवस्था, रामायण से सम्बंधित भ्रान्त धारणाओं का समाधान, रामायण का तुलनात्मक अध्ययन व भ्रातृ प्रेम आदर्श पुत्र आदि अवलोकन करना चाहते हैं, वो रामायण को अवश्य पढ़ें। इसे पढ़ने वाला इसी के अनुरूप आचरण करने वाला भ्रातृप्रेमी, सदाचारी, धार्मिक, आदर्श पति-पिता-पुत्र व गृहस्थ, मोक्ष, मानव जन्म का अधिकारी, वीर एवं शौर्य सम्पन्न बनेगा, इसमें मुझे कोई संशय नहीं है।

संध्या काल

कार्तिक मास, हेमन्त ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(6 अक्टूबर 2017 से 4 नबम्बर 2017)
प्रातः कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 P.M.)

मार्गशीष मास, हेमन्त ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(5 नवम्बर 2017 से 03 दिसम्बर 2017)
प्रातः कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 P.M.)

राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सम्मेलन

गत् 30 सितम्बर को विजय दशमी पर्व को सार्थक करते हुए राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा का राष्ट्रीय सम्मेलन पानीपत में आयोजित किया गया। सम्मेलन का प्रारम्भ प्रात:काल यज्ञ से हुआ। उसके उपरान्त 2000 से अधिक मोटरसाइकिलों पर ओम् ध्वज व तिरंगा लगाकर चार हजार क्षत्रियों ने पानीपत शहर में एक यात्रा निकाली जिसे देखकर पानीपत निवासी अभिभूत हुए। सामान्य जन भी इसे देखकर रोमांचित थे। शोभा यात्रा के पश्चात् सभी पण्डाल में पहुँचे तथा अन्य हजारों लोगों के साथ मिल गए व सभा का प्रारम्भ हुआ। पानीपत शहर व ग्रामीण क्षेत्र के विधायक, कई पूर्व विधायक तथा आर्य निर्माण के महान कार्य में संलग्न अनेकों विद्वान सम्मेलन में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा- आर्य क्रान्ति के उद्भावक, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान तथा लाखों युवाओं को आर्यत्व की ओर प्रेरित करने वाले श्रद्धेय आचार्य परमदेव मीमासंक जी का ज्ञानवर्धक व प्रेरक उद्बोधन।

आचार्य जी ने अपने उद्बोधन में आह्वान किया कि आओ मिलकर वर्ण व्यवस्था को स्थापित करें जिससे जाति व्यवस्था को समाप्त किया जा सके। उनका स्पष्ट निर्देश आर्य क्षत्रियों व अन्य आर्यों को यही था कि हमें व्यक्तिवादी न होकर वेद व तर्क के सहारे आगे बढ़ना है। कभी भी इस सिद्धान्त से हटें नहीं। इस प्रकार वे ठीक-ठीक मार्ग पर चल सकेंगे और अपने राष्ट्र में वर्ण व्यवस्था स्थापित कर सकेंगे, जिससे कोई ऊंच-नीच नहीं रहेगी। आचार्य जी ने वर्ण व्यवस्था के मूल बिन्दुओं को समझाते हुए कहा कि शुद्र भी आर्य है और सभी वर्णों का कर्तव्य बनता है कि वह शुद्रों को संभालें तथा उन्हें आर्य पथ से विचलित न होने दें। उन्होंने कहा कि ब्राह्मण की विद्या, क्षत्रिय का बल व वैश्य का धन जब सबसे पहले शुद्र के उत्थान में लगेगा तो वर्ण व्यवस्था स्थापित होकर राष्ट्र का उत्थान होगा। उन्होंने आर्य क्षत्रियों से आहवान किया कि वे तीन कार्यों को अपने जीवन का लक्ष्य बनाएं- **सेवा**, **सुरक्षा**, **संघर्ष**। इसी से होगा समाज व राष्ट्र का उत्थान। क्षत्रिय ही पूरे समाज व राष्ट्र को चलाता है, संभालता है। सबकी सुरक्षा वही करता है, अत: क्षत्रिय वर्ण सबसे महत्वपूर्ण है। क्षत्रिय का सबसे बड़ा शत्रु भय है। अत: सभी आर्य क्षत्रिय भयमुक्त होकर कार्य में जुटें, तभी हम लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

आचार्य जी ने कहा कि आज तो लोग अपनी सफलता का पैमाना, अपना लक्ष्य केवल अपने व्यापार को लाखों से करोड़ों तक ले जाने का रखते हैं, लेकिन हमारा लक्ष्य और हमारी सफलता लाखों ऐसे क्षत्रियों के निर्माण में है जो क्षत्रिय गुण से युक्त हों। सम्मेलन में यह भी घोषणा की गयी कि अगले वर्ष का सम्मेलन विजय पर्व (2018) के दिन में दिल्ली में आयोजित होगा। इसके लिए राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष आर्य विरेन्द्र छारा व कार्यकारी अध्यक्ष आचार्य अवनिश द्वारा दिल्ली प्रान्त की क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष आर्य कमलदीप जी को ध्वज सौंपा गया जिससे वे अगले वर्ष होने वाले सम्मेलन की तैयारियाँ प्रारम्भ कर सकें। हरियाणा प्रान्त की क्षत्रिय सभा की पूरी टीम ने अध्यक्ष आर्य ईश्वर जी व पानीपत जनपदीय अध्यक्ष आर्य संदीप सिंह के नेतृत्व में पानीपत के आर्यों व क्षत्रियों (श्रीपाल आर्य, आर्य रणदीप सरपंच, आर्य सुरेश कक्कड़, आर्य सुरेन्द्र बाहरी, आर्य सुरेश छोकर, आर्य अजीत, आर्य संदीप सैनी, आर्य योगेन्द्र, आर्य सुनील दत्त, आर्य प्रवीन) के सहयोग से सुन्दर व्यवस्था करके पूरे सम्मेलन को सफल बनाया।

-आर्य रवि गोयल, कोषाध्यक्ष-राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा

आर्य परिवार सम्मेलन

राष्ट्रीय आर्य संरक्षिणी सभा आर्यों के संरक्षण के लिए कार्यरत है और सभा द्वारा इसके लिए परिवारों को आर्य बनाने का कार्य आरम्भ किया गया है, जिससे यही परिवार भविष्य में समाज को आर्य बनाने की ओर अग्रसर होंगे। व्यक्ति आर्य बन गया तो वह चाहता है कि मेरे परिवार के और सदस्य भी आर्य बनें और जब परिवार के कुछ और सदस्य आर्य सिद्धान्तों को जान लेते हैं तो वह बन जाता है एक आर्य परिवार। परिवार आर्य बनने के उपरान्त उसमें रहने वाले सभी सदस्यों का आर्य के रूप में संरक्षण हो जाता है और परिवार में आर्य परम्पराओं का पालन प्रारम्भ हो जाता है।

इसी आर्य परिवार की धारणा को आगे बढ़ाने के लिए संरक्षणी सभा द्वारा अधिक से अधिक आर्य परिवारों के निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया गया है, जिससे आर्यों का संरक्षण हो सके। इसके लिए जनपद स्तर पर आर्य परिवार सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। जनपद के सभी आर्य परिवार एकत्रित होते हैं, आर्य परिवार कैसा हो इस पर विद्वानों से निर्देश प्राप्त होते हैं, परिवारों को गृहस्थ आचार संहिता प्रदान की जाती है। वैदिक सिद्धान्तों के पालन का संकल्प पूरे परिवार द्वारा लिया जाता है। सभी परिवारों में सभी संस्कार वैदिक पुरोहितों द्वारा हों, ऐसा निश्चय किया जाता है और अधिक से अधिक आर्य परिवार जनपद में बनें इसके लिए अधिक से अधिक पुरुषार्थ के लिए सभी तैयार होते हैं।

आर्य परिवार निर्माण की इसी प्रक्रिया में गत दो अक्टूबर 2017 को दिल्ली के उत्तर-पश्चिम जनपद के परिवारों का एक सम्मेलन सेक्टर-24, रोहिणी, में आयोजित हुआ। इस जनपद में लगभग 50 आर्य परिवार सक्रिय हैं उनमें से विशेष परिस्थितियों के कारण कुछ परिवार इसमें सम्मिलित नहीं हुए। अन्य सभी परिवार अपने व्यक्तिगत यज्ञकुण्ड लेकर कार्यक्रम में उपस्थित हुए, ताकि सभी परिवारों में यज्ञ की परम्परा स्थापित हो, सबके घरों में यज्ञकुण्ड हों, सब परिवार यज्ञ करें।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय आर्य संरक्षिणी सभा के केन्द्रीय अध्यक्ष आचार्य संजीव जी उपस्थित हुए, जिन्होंने आर्य परिवारों को वो उपदेश दिया जिससे एक गृहस्थ का जीवन अधिक से अधिक सुखमय हो व वह आर्य निर्माण व संरक्षण के कार्य में और अधिक सहयोगी हो। उनके अलावा राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पं॰ लोकनाथ जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में दिल्ली प्रान्त के संरक्षिणी सभा के अध्यक्ष आर्य सुरेश जी, राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के दिल्ली प्रान्त के अध्यक्ष आर्य कमलदीप जी, राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के दिल्ली प्रान्त के अध्यक्ष आर्य महेश जी, करनाल जनपद के संरक्षिणी सभा के अध्यक्ष आर्य राधेश्याम जी, निर्मात्री सभा उत्तर प्रदेश के सचिव आर्य उपेन्द्र जी, संरक्षणी सभा दक्षिण-पश्चिम दिल्ली की अध्यक्षा आर्या सुयशा जी, राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के महासचिव आर्य कप्तान जी व कोषाध्यक्ष आर्य वरुण जी सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आचार्या इन्द्रा जी द्वारा आर्य परिवारों में यज्ञ व संध्या की महत्ता पर प्रकाश डाला गया तथा इसके लिए सभी परिवारों को संकल्पित किया गया। इस सामूहिक प्रयास के अतिरिक्त भी नियमित रूप से आर्य परिवारों की संख्या में वृद्धि का कार्यक्रम चल रहा है। जो आर्य युवक व युवती गृहस्थ में प्रवेश कर रहे हैं उन्हें विवाह के उपरान्त संरक्षिणी सभा द्वारा गृहस्थ आचार संहिता प्रदान की जाती है। आर्य दम्पत्तियों के वैवाहिक वर्षगाँठ पर भी उन्हें आर्य परिवार के रूप में संकल्पित कर संरक्षित किया जाता है। संरक्षिणी सभा का यह आर्य संरक्षण का कार्य ही भविष्य में चलकर राष्ट्र रक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

-सरोज आर्या, अध्यक्षा संरक्षिणी सभा (उत्तर-पश्चिम दिल्ली)

गोरक्षा-मांसाहार की प्रवृति से निवृति

-आर्य प्रमोद

गोरक्षा का प्रश्न इस राष्ट्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, अनेकों वर्षों से गोरक्षा के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। गोवध को रोकने के लिए अनेक आन्दोलन हुए हैं, लगभग सारा हिन्दू वर्ग चाहता है कि हमारे राष्ट्र में तो कम से कम गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगे। इनमें कोई शंका भी नहीं है कि गाय की रक्षा हर दृष्टि से आवश्यक है, अर्थात् आर्थिक, समाजिक व धार्मिक। आर्य समाज का भी प्रारम्भ से ही गोरक्षा के लिए समर्पण रहा है क्योंकि आर्य समाज के सिद्धान्तों में मांसाहार पर ही पूर्णत प्रतिबन्ध है लेकिन यदि हिन्दू समाज की बात की जाए तो एक बड़ी बिड़म्बना दिखाई देती है कि हिन्दू समाज के अधिकांश संगठन गोरक्षा की बात तो करते हैं, लेकिन मांसाहार को समाप्त करने की बात नहीं करते। बल्कि कुछ हिन्दूवादी संगठन तो ऐसे हैं जो कहते हैं कि- मांसाहार इसलिए करना ही चाहिए कि जिससे आक्रामक प्रवृति पैदा हो।

भला यह कहां की बात हुई कि गाय की तो रक्षा की जाए और बकरे-मुर्गे खाए जाएं। इसमें कोई शंका नहीं कि गाय का उपयोग सब जीवों में ज्यादा है लेकिन उपयोगिता तो प्रत्येक जीव की है। यह सम्भव नहीं है कि लोग बकरे-मुर्गे, अण्डे खाते रहें और गोरक्षा की बात करें। यह तो बिडम्बना है-क्योंकि मांसाहारी व्यक्ति के अन्दर गोरक्षा के लिए नैतिक साहस नहीं बचता है, इसलिए यदि हम गोरक्षा चाहते हैं तो समाज से मांसाहार की प्रवृति को ही समाप्त करना होगा। मांसाहार ही अपने आप में अनैतिक कार्य है। और आर्य समाज सम्पूर्ण रूप से मांसाहार के विरुद्ध है भले प्रारम्भ में कुछ लोगों के द्वारा उस पर विवाद खड़ा किया गया हो लेकिन अब तो यह निश्चित हो चुका है कि मांसाहार का आर्यों में कोई स्थान नहीं है। अत: आर्य सिद्धान्तों का जितना प्रचार-प्रसार होगा, उतना ही मांसाहार की प्रवृति पर रोक लगेगी और गाय के साथ-साथ अन्य प्राणियों की भी रक्षा होगी क्योंकि वैदिक सिद्धान्त तो प्राणिमात्र के कल्याण की बात करते हैं। गाय की रक्षा व उसकी वंश वृद्धि के लिए उसके उत्पादों का अधिक से अधिक उपयोग तो करना ही चाहिए, लेकिन आर्य निर्माण के द्वारा भी इस कार्य को बढाया जाता रहना चाहिए। और अन्य लोगों को भी चाहिए कि मांसाहार की प्रवृति पर रोक ही गोरक्षा कि लिए नैतिक साहस भी पैदा करती है।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा के बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक **www.aryanirmatrisabha.com/पत्रिका** पर जाएं।

06 अक्टूबर-04 नवम्बर 2017 **कार्तिक** ऋतु- हेमन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
				रेवती कृष्ण प्रतिपदा 6 अक्टूबर	अश्विनी कृष्ण द्वितीया 7 अक्टूबर	भरणी कृष्ण तृतीया 8 अक्टूबर
कृतिका कृष्ण चतुर्थी 9 अक्टूबर	रोहिणी कृष्ण पंचमी 10 अक्टूबर	मृगशिरा कृष्ण षष्ठी 11 अक्टूबर	आर्द्रा कृष्ण सप्तमी/अष्टमी 12 अक्टूबर	पुनर्वसु कृष्ण नवमी 13 अक्टूबर	पुष्य/आश्लेषा कृष्ण दशमी 14 अक्टूबर	मघा कृष्ण एकादशी 15 अक्टूबर
पू० फाल्गुनी कृष्ण द्वादशी 16 अक्टूबर	उ० फाल्गुनी कृष्ण त्रयोदशी 17 अक्टूबर	उ० फाल्गुनी कृष्ण चतुर्दशी 18 अक्टूबर	हस्त कृष्ण अमावस्या 19 अक्टूबर	चित्रा शुक्ल प्रतिपदा 20 अक्टूबर	स्वाती शुक्ल द्वितीया 21 अक्टूबर	विशाखा शुक्ल तृतीया 22 अक्टूबर
अनुराधा शुक्ल चतुर्थी 23 अक्टूबर	ज्येष्ठा शुक्ल चतुर्थी 24 अक्टूबर	मूल शुक्ल पंचमी 25 अक्टूबर	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल षष्ठी 26 अक्टूबर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल सप्तमी 27 अक्टूबर	श्रवण शुक्ल अष्टमी 28 अक्टूबर	धनिष्ठा शुक्ल नवमी 29 अक्टूबर
धनिष्ठा शुक्ल दशमी 30 अक्टूबर	शतभिषा शुक्ल एकादशी 31 नवम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल द्वादशी 1 नवम्बर	उत्तराभाद्रपदा/रेवती शुक्ल त्रयोदशी 2 नवम्बर	अश्विनी शुक्ल चतुर्दशी 3 नवम्बर	भरणी शुक्ल पूर्णिमा 4 नवम्बर	

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

The boy set out towards Haridwar-the home of the homeless. The journey was an arduous one and his blindness exposed him to many hardships but it was accomplished somehow. Here he commenced a life study and learnt all that the best and most learned in Haridwar could teach him. He was remarkably intelligent, and possessed a wonderful memory. It did not take him long to gain reputation as a scholar. It was in his eighteenth year that he was initiated into Sanyasa by a worthy Sanyasi, Swami Purnanand by name. Virajanand continued his studies with great assiduity and turned into a profound Vedic Scholar. He impressed all round him with his depth of learning and intellect. It was not without reason that people called him Prajna Chakshu or one gifted with the inner vision. One day the Maharaja of Alwar heard him recite the Vishnu stotra of great Shankaracharya and was so much moved by his rich and sonorous tones that be requested him to accompany him to Alwar. The Swami hesitated but on the Raja's insistence he consented on the condition that His Highness would read Shastras with him for three hours every day, and that if he missed a single lesson, the Swami would leave his state. Having reached Alwar, the Raja treated him with great respect and care, and took his lesson regularly. Three years passed away. One day the Maharaja joined a pleasure party, when it was time for getting his lessons. When he returned and went to his preceptor, the latter was in bad temper.

"Prince, you have broken your word; now I cannot stay here."

The Maharaja begged the swami's forgiveness, but in vain. The latter left for Bharatpur without caring to inform the Prince that he was going. Little do such people endowed with inward riches care for outward wealth and glory.

Virajanand stayed for a few months at Bhartpur, from where he proceeded to Mathura. Here he resolved to settle down and started a school. For this purpose he rented a building. His reputation as a great scholar and keen teacher attracted a good many pupils. As his fame spread, the citizens of Mathura began to hold him in great esteem. Many important men paid him visits and everyone was amazed at struck by his deep learning and greatness in the advocacy of what he thought to be right.

Virajanand abhorred all Sanskrit books which are not Rishikrita, and held the Puranas in profound contempt. He would not refrain from giving vent to this abhorrence even in the presence of orthodox Pandits of the opposite school. He was conscious of his strength and knew he could vindicate his position, if any one dared to take exception to his view.

To such a monk, on the 14th of November, 1860, Dayanand reached to that great scholar of grammar. He was thirty-six at this time, but the advance in years had not seen any waning in his eagerness for learning. He was always ready to learn and seek truth.

There was a tap at Swami Virajanand's door.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

कुछ सत्य पता थे किन्तु दृढ नहीं थे। यहाँ सत्र में कई सत्य जो हम जानते तो थे किन्तु उनकी व्याख्या करने में समर्थ नहीं थे। कुछ -कुछ सत्य जिनको मानने के लिये बुद्धि व चित्त में तर्क भी हुआ। स्वयं से भी प्रश्न उत्तर विधि अपनायी, बहुत सी स्मृति लुप्त हो गयीं कुछ अभी शेष हैं कि हम ये क्यों न करें?

आचार्य जी ने जो वेदोक्त सत्य बताया वह पूर्ण सत्य है क्योंकि वही वेद की आज्ञा अर्थात् ईश्वरीय विधान है। मैं यही चाहूंगी कि इस प्रकार के सत्र निरन्तर लगते रहें। यह बहुत पवित्र कार्य है।

समयानुसार मैं हर तरह का सहयोग (तन-मन-धन) से करने के लिए उपस्थित रहूँगी।

नाम: सीमा आर्या, आयु : 37 वर्ष , योग्यता : बी.एड, (योग शिक्षका), पता: कृष्णा ग्रीन कॉलोनी, आगरा, उ०प्र०

आर्य निर्माण का एक उत्तम तरीका है, मन में बहुत समय से विचार चल रहा था कि आर्य बनाने का कोई कार्य होना चाहिए। आज उस कार्य को देखकर अपार प्रसन्नता हुई। आर्य निर्मात्री सभा के इस पुनीत कार्य में मैं तन-मन-धन आदि सभी प्रकार के सर्वसामर्थ्य से साथ हूँ। मैं इस कार्यको आगे ले जाने में सदैव उद्यत रहूँगा।

नाम: विश्वेन्द्रार्य, आयु: 37 वर्ष योग्यता: स्नात्कोत्तर, पता: ऊँचा गाँव, हाथरस, उ०प्र०

हमें अपने मूल धर्म व परमपिता परमेश्वर के बारे में उचित ज्ञान मिला है। जिन अंधविश्वासों और पाखन्डों से हम घिरे हुए थे, उनसे हमें छुटकारा मिल गया है और हमारे ऋषियों के विचारों, परम्पराओं और वेदों के बारे में जानकारी मिली है। हमें हमारे पूर्वजों के बारे में सही जानकारी मिली जो अभी तक के गलत तरीके से बताई, पढ़ाई गई थी। हमें अपने जीवन में आर्यों के सिद्धान्तों को अपनाने की प्रेरणा मिली है।

सबसे पहले मैं अपने आपको और अपने परिवार, बच्चों को एक कट्टर (दृढ़) आर्य बनाऊंगी। उसके बाद प्रचार और प्रसार में अपना पूरा सहयोग करुंगी।

नाम: सुमन कुमारी, आयु: 33 वर्ष, योग्यता: एम.ए., पता: कन्साला, रोहतक, हरियाणा

आर्य जी! मेरा अनुभव यह है कि यह सत्र मेरे जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन लेकर आया है। मैं अपने आपको, ईश्वर को ठीक-ठीक जान पाया हूँ, उसे मैं मानता हूँ और उस ईश्वर की उपासना मैंने प्रारम्भ कर दी है। अब मैं आर्य हूँ, वेदों के मार्ग पर चलने वाला बन गया हूँ। अब मेरा भ्रम दूर हो गया है, वेदों की आज्ञा को मानने वाला ही धर्म होता है और उसे जो नहीं मानता वह अधर्म होता है। राष्ट्र की रक्षा कैसे करनी है, यह मैं अच्छी तरह समझ गया।

आर्य जी मेरे जीवन का एकमात्र लक्ष्य-"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" है। मेरे सम्पर्क में जीतने भी हिन्दू हैं, भटके हुए लोग हैं। मैं उनको आर्य बनाने के लिए तन-मन-धन से पूर्ण रूप से सहयोग करने का संकल्प लेता हूँ।

नाम: लक्ष्मीनारायण आर्य, आयु: 21वर्ष, योग्यता: 12वीं, पता: ग्राम तेलीबट, छिंदवाडा, मध्यप्रदेश

वंचितों के लिए खोला शिक्षा का द्वार

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की नरवाना इकाई ने पिछले माह चमेली कॉलोनी में रहने वाले समाज के अत्यन्त उपेक्षित वर्ग झुग्गी झोपड़ी वाले गरीब परिवारों के 20 बच्चों का दाखिला राजकिय प्राथमिक विद्यालय गांधी नगर में करवाया। सभा के कार्यकर्ता आर्य सुमित कुमार ने पिछले 2 माह से लगातार प्रयास करते हुए इन बच्चों के माता-पिता को तैयार किया और इन बच्चों को अक्षर ज्ञान करवाया। इस अवसर पर संयोजक आर्य नरेन्द्र कौशिक ने बताया कि सब दानों में विद्या का दान सबसे बड़ा होता है और शिक्षा से ही समाज और राष्ट्र का हित एवं उन्नति सम्भव है। आर्य निर्मात्री सभा इस क्षेत्र में पूरी तत्परता से कार्य कर रही है और इस कार्य के लिए आर्य सुमित जी का हार्दिक धन्यवाद है। पूरे कार्यक्रम में खण्ड मौलिक शिक्षा अधिकारी बलजीत पूनियां, प्राध्यापक राममेहर बेनीवाल जी और अनुज जी का विशेष योगदान रह। इस पावन मौके पर आचार्य जयपाल और आर्य मोहन कौशिक जी उपस्थित रहे। बच्चो के स्कूल में आगमन पर मुख्याध्यापक जी ने हार्दिक स्वागत किया।

-आर्य नरेन्द्र, नरवाना, जीन्द, हरियाणा

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।